रंगों के प्रतीक

प्रश्न : कल आपने कबीर और धरमदास के संदर्भ में लाल रंग की महिमा बतायी लेकिन मुहम्मद को हरा रंग पसंद आया और नानक को नीला; यद्यपि वे दोनों भक्त ही थे। कृपा कर समझाएं।

एक-एक व्यक्ति अनूठा है। उसकी अपनी पसंद है, अपनी रुझान है। उसका जीवन को देखने का अपना झरोखा है। यह सारा जगत् परमात्मा से भरा है। ये सब रंग उसके हैं। परमात्मा सबरंग है। लेकिन प्रत्येक की अपनी सूझ है। अपने प्रतीक खोजने पड़ते हैं।

कबीर और धरमदास ने लाल की बड़ी प्रशंसा की।

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गयी लाल

तो मैंने कल तुम्हें लाल रंग का अर्थ कहा कि लाल है जीवन का प्रतीक; कि लाल है उत्सव का प्रतीक, कि लाल है फूलों और बसंत का रंग। इसलिए गैरिक रंग का एक नाम बासंती रंग भी है। लाल है जीवन के खिलाव का प्रतीक, सूरज का प्रतीक, प्रकाश का प्रतीक, क्रांति का प्रतीक, अग्नि का प्रतीक। यह सब मैंने तुमसे कल कहा। स्वभावतः यह प्रश्न मन में उठा होगा, फिर मुहम्मद ने लाल क्यों न चुना? हरा कुछ कम नहीं। हरे के अपने अर्थ हैं।

समझने की कोशिश करो। हरा भी जीवन का प्रतीक है। जब तक जीवित होता है वृक्ष, हरा होता

है। जब मर जाता है तब हरा नहीं रह जाता। वह जो हरी धार वृक्ष में बहती है वह जीवन की धार है। लेकिन फिर भी दोनों प्रतीकों में भेद है। फूल तो अंत में आता है। हरा रंग पहले आता है, लाल रंग बाद में आता है। लाल रंग निष्पत्ति है, लाल रंग मंज़िल हैं। हरा रंग यात्रा है।

और मुहम्मद का ज़ोर यात्रा पर ज़्यादा है। और एक अर्थ में बड़ा महत्वपूर्ण है। क्योंकि अगर यात्रा ठीक है तो लाल रंग तो आ ही जाएगा। अगर वृक्ष ठीक-ठीक हरा है और उसमें रसधार बहती है तो फूल तो आएंगे ही आएंगे; उनकी तुम चिंता न करो। उनके लिए तुम्हें विचार करने की जरूरत नहीं है। साधन सम्यक् है तो साध्य तो आएगा ही। असली विचार साधन का है। अगर साधन सम्यक् नहीं है तो तुम लाख फूलों का विचार करते रहो, फूल नहीं आएंगे; नहीं आएंगे।

माली फूलों का हिसाब थोड़े ही करता है, वृक्ष के हरेपन को ध्यान में रखता है। देता पानी, देता खाद, वृक्ष जीवंत रहे तो जीवन की अंतिम ऊंचाई पर वे शिखर फूल के अपने आप प्रकट होते हैं। वृक्ष में ये फूल खींच-खींचकर थोड़े ही निकालने होते हैं। वे तो अपने से आते हैं। वे सहज अभिव्यक्तियां हैं। अगर कोई भी चीज़ ठीक रास्ते पर चलती रहे, चलती रहे तो मंज़िल मिल ही जाती है। इसलिए मंज़िल विचारणीय नहीं है, तीर्थ विचारणीय नहीं हैं, तीर्थ यात्रा विचारणीय है। लाल रंग है साध्य, हरा है साधन। मुहम्मद ने हरे को चुना क्योंकि वह साधन है और सारे धर्म साधन ही हैं। साध्य तो भीतर घटने वाली अनुभूति है। यह सहस्रदल कमल भीतर खिलेगा। वह फूल कभी खिलेगा, वह लाल सुर्खी कभी भीतर फैलेगी। लेकिन उसकी कल्पना में पड़ने से कुछ सार नहीं है। तुम वृक्ष को हरा करो।

इसी को दूसरे अर्थों में तुम समझो। मुहम्मद ने पूर्णिमा का चांद नहीं चुना, दूज का चांद चुना प्रतीक की तरह। क्यों? क्योंकि दूज का चांद यात्रा पर है, पथिक है, चल पड़ा है। पहुंच ही जाएगा, पूर्णिमा तो होने ही वाली है।

बौद्धों ने पूर्णिमा को चुना है, मुहम्मद ने दूज के चांद को।

एक ऐतिहासिक घटना है कि ईरान के बादशाह ने अपने एक वज़ीर को भारत भेजा मुगल बादशाह से मिलने। जैसा दरबारों में होता है, उस वज़ीर के कई विरोधी भी थे, कई प्रतियोगी भी थे, कई दुश्मन भी थे, कई उसकी जड़े काटने को तत्पर भी थे। वे कोशिश में लगे थे कि कुछ न कुछ भूल-चूक मिल जाए। जब वज़ीर हिंदुस्तान आया और उसने हिंदुस्तान के बादशाह को संबोधन किया दरबार में तो उसने कहा कि आप पूर्णिमा के चांद हैं। ईरान के बादशाह दूज के चांद हैं।

विरोधियों को खबर लगी। उन्होंने जाकर ईरान के बादशाह के कान भरे कि यह तो हद्द हो गयी, यह तो अपमान हो गया। अपना आदमी और हिंदुस्तान के बादशाह को पूर्णिमा का चांद कहे और आप को दूज का चांद बतलाए! यह तो बात बुरी हो गयी। बादशाह भी नाराज़ था।

जब यह वज़ीर वापिस लौटा, इसको नगर के द्वार पर ही गिरफ्तार कर लिया गया, हाथ में जंजीरें डाल दी गयीं। इसे दरबार में बुलाया गया और कहा कि तुम इसका उत्तर दो अन्यथा फांसी की सज़ा। यह हंसा। यह आदमी बड़ा बुद्धिमान रहा होगा। इसने कहा, निश्चित मैंने भारत के बादशाह को कहा कि आप पूर्णिमा के चांद हैं और आपको मैंने दूज का चांद कहा। क्योंकि पूर्णिमा के चांद के आगे अब कुछ नहीं है मौत के सिवाय। पूर्णिमा का चांद तो पहुंच गया आखिरी जगह। जहां पूर्ण हुआ वहां मौत हुई। आप विकासमान हैं। अभी आपको बहुत कुछ होना है। आप उगते सूरज हैं, वह डूबता सूरज है, आप इससे परेशान क्यों हो गए?

दूज का चांद विकासमान है, वैसे ही हरा रंग विकासमान है। लाल रंग पूर्णाहुति, हरा रंग विकास। इसलिए मुहम्मद ने जीवन के लिए हरा रंग चुना। वह संभावना का प्रतीक है, यात्रा का, साधन का, मार्ग का।

मुहम्मद का ज़ोर विकास पर है, क्रांति पर नहीं। इवोल्यूशन पर, रेवोल्यूशन पर नहीं। मुहम्मद मानते हैं कि सब चीज़ें अपने समय में विकसित होती हैं। क्रांति की कोई जरूरत नहीं हैं। क्रांति झपट्टा है, जल्दबाज़ी है। विकास धैर्य है, धीरज है। तब तुम समझोगे कि हरा रंग विकास का प्रतीक हैं, लाल रंग क्रांति का।

हरा रंग शांति का प्रतीक है। तुमने हरे रंग को देखा गौर से? इसलिए तो जंगल में जाकर शांति मालूम पड़ती है, हरे पहाड़ पर बैठकर चित्त शांत हो जाता है। हरे रंग को देखते-देखते तुम्हारी आंखें भी हरी हो जाती हैं, शांत हो जाती हैं। हरे रंग का जो परिणाम है वह शांति है। इस्लाम शब्द का ही अर्थ होता है शांति। शांति पर बड़ा ज़ोर है। वही ध्यान की भंगिमा है।

> लाल है उत्सव का प्रतीक, कि लाल है फूलों और बसंत का रंग। इसलिए गैरिक रंग का एक नाम बासंती रंग भी है। लाल है जीवन के खिलाव का प्रतीक, सूरज का प्रतीक, प्रकाश का प्रतीक, क्रांति का प्रतीक, अग्नि का प्रतीक

मुहम्मद को तलवार उठानी पड़ी लेकिन बड़ी विवशता से। उठाना नहीं चाहते थे, बड़ी मजबूरी में। विरोधियों ने उठवा दी। कोई और उपाय न था इसलिए उठानी पड़ी। लेकिन तलवार पर भी जो संदेश लिखा था वह यही था; 'मेरा संदेश शांति है।' तलवार पर खोद रखा था। यह अजीब तलवार हुई क्योंकि तलवार पर शांति का संदेश खोदा हुआ है। यह इस बात की खबर है कि मुहम्मद का बस चलता तो तलवार उठाते ही नहीं। किसी को कंकड़ भी न मारते।

लेकिन मजबूरी थी। चारों तरफ बड़ा जंगली वातावरण था। मुहम्मद को काम करने की सुविधा ही न थी। तो शांति के लिए लड़ना पड़ा। विरोधाभासी लगती है बात। और उसी में इस्लाम भ्रष्ट भी हुआ। मुहम्मद तो मजबूरी में लड़े लेकिन उनके पीछे आनेवालों ने लड़ने में मज़ा लेना शुरू कर दिया। वे मजबूरी तो भूल गए मुहम्मद की। वह तलवार पर लिखा संदेश तो कभी का धूमिल होकर मिट गया। तलवार हाथ में रह गयी। तलवार खतरनाक चीज़ है। ठीक हाथ में हो तो काम की होती है, गलत हाथ में हो तो बड़ी महंगी पड़ जाती है। छोटे बच्चे के हाथ में जैसे तलवार दे दो, वैसी खतरनाक चीज़ है।

और दुनिया में गलत आदमी हैं, गलत आदमियों की भीड़ है। इनके हाथ में तो फूल भी खतरनाक हो जाता है, तलवार का तो कहना ही क्या? इनके हाथ में फूल भी हो तो उसका उपयोग भी पत्थर की तरह करेंगे किसी का सिर तोड़ देने के लिए। इनके हाथ में तलवार हो तब तो कहना

ही क्या। इनको बड़ी सुविधा हो गयी।

तो इस्लाम शांति का धर्म, अशांति का कारण बन गया। मगर मुहम्मद का चुनाव तो उचित ही था। उस चुनाव में कोई भूलचूक नहीं खोजी जा सकती। हरे रंग को उन्होंने शांति के रंग की तरह चुना।

सकती। हरे रंग को उन्होंने शांति के रंग की तरह चुना।

नानक ने नीला रंग चुना है। नीला रंग विराट् का रंग है—विराट् आकाश का, असीम का, अनंत का। नानक का मन असीम के साथ तल्लीन है, जो दिखाई नहीं पड़ता और है; जो पकड़ में नहीं आता और है। जिस पर सीमा नहीं खींची जा सकती और जो सबको घेरे हुए है, उस आकाश की तरह है परमात्मा।

तुमने देखा, आकाश का रंग नीला है। यह तुम जानकर हैरान होओगे कि वैज्ञानिक कहते हैं आकाश में कोई रंग नहीं है। है भी नहीं। फिर नीला क्यों दिखाई पड़ता है। वे कहते हैं आकाश के विस्तार के कारण नीले की भ्रांति पैदा होती है। जहां गहराई होती है वहां नीला रंग पैदा हो जाता है—होता नहीं तो भी। जब पानी की धार छिछली होती है, सफेद मालूम होती है। जब पानी की धार गहरी हो जाती है तो नीली हो जाती है। एक कप में भरो नीली नदी के पानी को और तुम पाओगे वह सफेद है। लेकिन नदी में नीला मालूम पड़ रहा है। क्यों? गहराई के कारण। गहराई का आयाम नीले रंग की भ्रांति पैदा कर देता है।

आकाश में कोई रंग नहीं है सिर्फ, लेकिन गहराई बड़ी है। किस नदी में इतनी गहराई होगी? किस सागर में इतनी गहराई होगी? प्रशांत महासागर सबसे गहरा है लेकिन उसकी गहराई भी पांच मील है। पांच मील बड़ी गहराई है मगर आकाश के मुकाबले क्या गहराई है? यह तो अंतहीन है। इसकी गिनती मीलों में होती ही नहीं। इसकी गिनती तो प्रकाशवर्ष में करनी पड़ती है।

प्रकाशवर्ष सबसे छोटी इकाई है आकाश के संबंध में। प्रकाशवर्ष का अर्थ समझ लेना। एक सेकेंड में प्रकाश चलता है एक लाख छियासी हज़ार मील। एक सेकेंड में एक लाख छियासी हज़ार मील। साठ सेकेंड़ : एक मिनट में साठ गुना। फिर साठ मिनट : एक घंटें में और साठ गुने से साठ गुना। फिर एक वर्ष में प्रकाश जितना चलता है, तीन सौ पैंसठ दिन में, वह सबसे छोटी इकाई है आकाश को नापने की। उस इकाई से भी नापा नहीं जाता। एक सीमा तक हम जाते हैं। हमारी सीमा आ जाती है, आकाश की सीमा नहीं आती। हमारे यंत्र चूक जाते हैं, आकाश नहीं चूकता।

नानक ने नीले को चुना विराट् की तरह। आकाश नानक के लिए परमात्मा का प्रतीक है। ऐसा ही वह अगम, अगोचर, अलख। ऐसा ही वह ओंकार। निर्गुण का रंग है नीला इसलिए हमने कृष्ण को, राम को नीला बनाया है।

अब कोई नीले आदमी नहीं होते, नीली जाति होती नहीं। सफ़ेद हैं लोग, काले हैं लोग, पीले लोग हैं। नीले लोग होते ही नहीं दुनिया में। हां, कभी-कभी बच्चे पैदा होते हैं जिनके खून में खराबी होती है, जो बच नहीं सकते। वे नीले होते हैं। वे बच ही नहीं सकते। उनके खून में खराबी होती है। उनमें प्रतिरोधक शक्ति नहीं होती।

तुमने हरे रंग को देखा गौर से? इसलिए तो जंगल में जाकर शांति मालूम पड़ती है, हरे पहाड़ पर बैठकर चित्त शांत हो जाता है। हरे रंग को देखते-देखते तुम्हारी आंखें भी हरी हो जाती हैं, शांत हो जाती हैं। हरे रंग का जो परिणाम है वह शांति है। इस्लाम शब्द का ही अर्थ होता है शांति। शांति पर बड़ा ज़ोर है। वही ध्यान की भंगिमा है

नहीं होता, नीला होता है। लेकिन कृष्ण और राम को इस देश ने नीला रंगा। कृष्ण का तो नाम ही श्याम पड़ गया है। इतना नीला रंगा कि नीला नाम ही हो गया उनका—श्याम। श्याम यानी नीला। गहराई का प्रतीक, निर्गुण का प्रतीक, निराकार का प्रतीक, विस्तार और असीमता का प्रतीक।

अलग-अलग धर्म अलग-अलग रंगों को चुने हैं। सभी रंग उसके हैं।

जैनों ने सफेद को चुना है क्योंकि शुभ्र रंग त्याग का प्रतीक है। वैज्ञानिक भी उनसे राज़ी हैं। अगर तुम वैज्ञानिक से पूछो रंगों का विश्लेषण तो वह तुमसे कहेगा, अगर तुम लाल फूल देखते हो तो उसका मतलब यह होता है कि उस फूल ने लाल रंग की किरणें छोड़ दीं। जब किरण फूल पर गिरती है प्रकाश की तो उसमें सात रंग होते हैं। पूरा इंद्रधनुष होता है। अब यह बहुत मज़े की बात है, तुम्हें फूल उस रंग का दिखाई पड़ता है जिस रंग की किरण वह नहीं पीता। छह रंग पी जाता है, वे तुम्हें दिखाई नहीं पड़ते। वह तो पी गया, उसने आत्मसात कर लिया। जो छोड़ देता है एक रंग, वह तुम्हें दिखाई पड़ता है। फूल लाल, क्योंकि उसने लाल रंग की किरण नहीं पी। अब यह बड़े मज़े की बात हो गयी। जो फूल लाल नहीं है वह लाल दिखाई पड़ता है। और जो फूल पीला, उसने पीले रंग की किरण छोड़ दी। और जो फूल नीला, उसने नीले रंग की किरण छोड़ दी। बाकी छह को पी गया। जिनको पी गया वे तो उसमें डूब गए, एक हो गए, आत्मसात हो गए। जो छूट गया वह रंग तुम्हारी आंख पर पड़ता है—छूटा हुआ रंग। वही तुम्हें दिखाई पड़ता है।

काले रंग का अर्थ होता है, सब पी गया, कुछ नहीं छोड़ा। इसलिए काला रंग लोभ का प्रतीक है। सब पी गया, कुछ नहीं छोड़ा। काला कोई रंग नहीं है। काला रंगों का अभाव है। और सफेद का अर्थ है सब रंग छोड़ दिए। सातों रंग छोड़ दिए, कुछ नहीं पिया। सातों रंग छोड़ दिए तो सातों रंग के मिलन से सफेद रंग मालूम होता है। सफेद रंग सातों रंगों का मिलन है। और काला रंग सातों रंगों का अभाव है। और बाकी रंग सब बीच में हैं।

जैनों ने सफेद को चुना क्योंकि त्याग उनका सूत्र है—सब छोड़ देने का। सबसे मुक्ति हो जाए। ऐसी निर्मलता हो कि कोई भी चीज़ पास न रह जाए। ऐसा अपरिग्रह भाव हो। कोई भी परिग्रह नहीं। मेरा कुछ भी न बचे। जहां मेरा कुछ नहीं बचता वहां से समाप्त हो जाता है। इसलिए शुद्ध निर्मल चित्तदशा में अहंकार नहीं होता। हो ही नहीं सकता। वह भी बड़ा प्यारा प्रतीक है।

बौद्धों ने पीला रंग चुना क्योंकि पीला रंग मृत्यु का प्रतीक है। और बुद्ध कहते ही हैं जीवन तो दुख है। जन्म दुःख, जवानी दुःख, बुढ़ापा दुःख। यहां दुःख ही दुःख हैं। इस जीवन से छुटकारा चाहिए इसलिए पीला रंग प्रतीक हो गया। पीला रंग जीवन के छुटकारे का प्रतीक है। जब पत्ता पीला हो जाता है तो गिर जाता है। पीला रंग मृत्यु का रंग है। जीवन से छुटकारा। जीवन के उपद्रव से छुटकारा। जीवन के चाक से छलांग लगा ली, कूद गए, निर्वाण का रंग है पीला।

और मृत्यु का अर्थ होता है निरंहकारिता। फिर निरंहकारिता। मर गए। कुछ नहीं बचा, मैं भी नहीं बचा, शून्य बचा। तो पीला रंग शून्य का प्रतीक हो गया।

ये अलग-अलग धर्मों की अपनी-अपनी साधना-पद्धतियां, अपने योग, अपने ध्यान, अपने-अपने यात्रा पथ, अपना-अपना लक्ष्य—उनके प्रतीक हैं। लेकिन एक ख़याल रखना, परमात्मा सबरंग है। परमात्मा पूरा इंद्रधनुष है। हां, तुम्हें कोई एक प्रक्रिया पकड़कर उसकी तरफ चलना होगा। तुम्हें कोई एक किरण पकड़कर उसकी तरफ चलना होगा। उस किरण को तुम जोर से आग्रहपूर्वक सम्हालते हो। मगर यह मत समझना कि बाकी रंग उसके नहीं हैं, सब रंग उसके हैं।

— ओशो
जस पनिहार धरे सिर गागर,
आठवां प्रवचन, दूसरा प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)